प्रिय भाइयों,

सब से अच्छी बात जो संसार में हो रही है वह है प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की पुनःस्थापना नयाँ नियम के अनुसार (**इफिसियों** 4:11, 3:5, 2:20; 1 **कुरिन्थियों** 12: 20; **मत्ती** 10:40) । गत महीना फ्लोरिडा में आयोजित प्रेरितीय सम्मेलन में हम कई एक को उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिस में हम ने एक रिपोर्ट भी पेश की । इस सम्मेलन के संदर्भ में और विषेश प्रकार खुला प्रेरितीय सम्मेलन के दौरन हम ने प्रेरितीय, भविष्यद्वक्ताओं, अन्य पंच सेवाकाईयो को अंतराष्ट्रिय संगती के रूप मे बढ़ते हुए देखी । यह एक सच्ची संग है न कि झूठी संगठन अथवा सरकारी हैं परन्तु अपसी सम्मान और अधीनता में आधारित हैं । यह संगती कई राष्ट्रो
में सेवाकाई के तौर पर फैल गई हैं ।

गत महीने के रिपोर्ट में हमने हमारे लाओस और नाईजेरिया के मेज़बान डाक्टर रिचार्ड इन्नोसेन्ट के विषय मे नही बताया । धन्यबाद रिचार्ड ।

रिवाइवल् संदेश

From **Revival Ministries Australia**
P.O. Box 2718 BC TOOWOOMBA Q4350 Australia
Phone: 61-7-46130633; e-mail: rma@revivalministries.org.au
Website: www.revivalministries.org.au

दिसम्बर 2007 *** **दिसम्बर** 2007 *** **दिसम्बर** 2007

रहस्य का सेवक

कुलुस्सियों 1: 24–29 में पौलुस उसके सेवाक होने की बुलाहट के विषय मे हमें गहरा प्रकाश देता है । इससे हम सिखते हैं कि मसीह के सेवक के कौन कौन सी ख़ास साधन हैं ।

दुख उठाने की बुलाहट

“अब मै ं उस दुखों के कारण आनन्द करता हूं, और तुम्हारे लिए उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिए , अर्थात कलीसिया के लिए अपने शरीर में पूरी किए देता हूं ।” **कुलुस्सियों** 1:24 ।

पहली बात पौलुस अपने सेवाकाई के विषय मे कहता है, दुखों की दर्जा जो कलीसिया में उसने एक सेवक होने के नाते सेवाकाई को पूरा करते समय अनुभव की । इस दुख ने पौलुस की देह को क्षति पहुँचाई । यह उसके लिए यह एक सच्चा अनुभव था जिससे वह होकर गुजरा । कई लोंग सेवाकाई में आए हैं जीविकोपार्जन वा आमदनी वा दर्जा पाने के लिए परन्तु मसीह की एक सच्चा सेवक पहले तो बुलाया जाता है और बुलाहट दुख को सम्मिलित करता हैं ।

यीशु ने कहा, ***“अच्छा चरवाहा मैं हूं ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है”*** । **यूहन्ना** 10: 11 । एक सच्चा सेवक वह है ***‘जो भाईयों के लिए अपना प्राण अर्पन करता है ’*** । यह एक दुख का बुलाहट है ।

<u>**थोड़े सेवक भाड़े के मज़दूर हैं**</u>

जो व्यक्ति सेवाकाई में कुछ आमदानी पाने की इच्छा रखते हुए सेवाकाई में प्रवेश करते हैं वास्तव में वे भाड़े के हैं । यीशु ने कहा, ***“वह इसलिए भाग जाता है कि वह मजदूर है, और उसको भेड़ों की चिन्ता नहीं”*** **यूहन्ना** 10:13 ।

<u>**कलीसियाओं के लिए चिन्ता**</u>

देह के लिए जिम्मेदार का बोझ उठाते हुए दुख आते हैं । सूची में उसके कष्टों का अनुभव सेवाकाई के आचरण के तौर पर हैं, पौलुस कहता है कि उसके साथ क्या हो रहा है, वह था ***“सब कलीसियाओ की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है”*** (2 **कुरिन्थियों** 11:28) । पौलुस कहता है कि उसका सब से बड़ा बोझ जो वह शरीर में झेल रहा है वह नही है परन्तु कलीसियाओं के लिए चिन्ता है ।

<u>**यह एक बिनतीपूर्ण बोझ**</u>

पौलुस कहता है कि कष्ट वास्ताव में ***“मसीह की सतावट है”*** । हम जानते है कि यीशु ***“परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा था”*** (**यशायाह** 53:4) और हम जानते है कि उसके दुख और मृत्यु हमारे पापों के लिए खुला तमाशा था । पौलुस यीशु के सचमुच दुख जो उसने हमारे पापों के लिए उठाए नहीं जिक्र करता है परन्तु एक सेवक मसीह की उस कष्ट को महसूस करके प्रभु के ह्दय से उसके देह को पहचानते हुए प्रर्थना और बिनती में प्रवेश कर सकता है । स्मरण किजीए यीशु के दुखों को जो उसने गतसमने बगीचा मे उठाया वह शारीरिक नही बल्कि उसके लिए क्रूस पर दुख उठाने से भी बड़कर था ।

हरेक सच्चा चेला और खासकर सच्चा सेवक को उस व्यग्रता तक पहुँचाना है जहाँ दबाव हो, हैरानी हो, सतावट हो और शारीरिक कष्ट हो, तो भी स्थिर रहना है, ***“हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिए फिरते है; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो”*** (2 **कुरिन्थियों** 4:8-10) । देह की खातिर हमें इन बातों से होकर गुजरने का बुलाहट है कि देह को अनुग्रह प्रदान करें (**पद** 15) ।

<u>**अनुग्रह का सेवकपन**</u>

सेवाकाई अनुग्रह का सामर्थशाली प्रभाव है । परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा हमें सेवाकाई करने की काबलियत प्रदान करता है (2 **कुरिन्थियों** 3:5-6) । पौलुस कहता है कि वह ***“जिस का मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिए मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा पूरा प्रचार करूं”*** (**कुलुस्सियों** 1:25) । यह सेवाकाई अनुग्रह का सेवाकाई है । पौलुस कहता है **इफिसियों** 3:2-3 में कि यह ***“प्रबन्ध / सेवाकाई परमेश्वर के अनुग्रह”*** द्वारा दिया गया है, कलीसिया के लिए पौलुस को, वचन की सेवाकाई के लिए सामर्थ प्रदान की जिस से रहस्य का प्रकाश प्रगट करें ।

सेवाकाई की बुलाहाट ***“परमेश्वर की अनुग्रह के वरदान के अनुसार”*** पूरी हो सकती है केवल जो सेवक को सेवाकाई के कार्य कार्य पूरा करने के लिए सार्मथ प्रदान करता है - यह उसकी ***“सार्मथ के प्रभाव”*** है (**इफीसियों** 3:7) ।

वचन की सेवाकाई

परमेश्वर की ओर से सेवक ***“परमेश्वर का वचन को पूरा करना है”*** (**कुलुस्सियों** 1:25)। जिस सेवाकाई की बातें हम कर रहे है वह डिकन की नहीं है जो सभा की एक सेवाकाई है परन्तु **वचन की सेवाकाई** है । प्रेरित पतरस ने वचन के लिए सेवक की बुलाहट और सभा चलाने के बुलाहट के मध्य एक स्पष्ट भिन्नता प्रगट की ।

प्रेरित 6:1–7 में यरूशलेम की कलीसिया मे समस्या खड़ी हुई और प्रेरितों का जवाब था सेवकों की संख्या बढ़ाई जाए ***“हम उन्हें इस काम (व्यावहारिकता की सेवाकाई) पर ठहरा दें, परन्तु हम (प्रेरित) तो प्रार्थना और वचन की सेवा में लगे रहेंगे”*** । सेवाकाई में कामों को विभाजन करने के द्वारा सेवाकाई का कार्य में ***“परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी ”*** ।

भेदों को जानना और प्रचार करना

भेदों का प्रकाश

वचन के अनुसार, वचन की सेवाकाई तभी पूरी होती है जब-जब सेवक ***“अर्थात उस भेद को जो समयों और पीढ़ीयों से गुप्त रहा ”*** जानता हो । वचनानुसार प्रेरितों और भविष्यद्वक्ता की सेवाकाई की मौलिक भाग हैं पवित्र आत्मा से भेदों के प्रकाश को प्राप्त करें (**इफिसियों** 3:5) और संतो को ज्ञात कराए । बहुत शताब्दियों से प्रेरितों और भविष्यद्वक्ता के सेवाकाई में यह नही देखा गया और यदि देखा भी गया हो तो उन्हें कलीसिया ने ग्रहण नही किया । इसलिए कलीसिया भेदों की ज्ञान में अनजान रही ।

गहरा ज्ञान

भेद परमेश्वर का गहरा ज्ञान है और परिपक्व होने के लिए है (1 **कुरिन्थियों** 2:6–7) । यह केवल सिद्ध होने से मिलती है । संतों तक आत्मा से भेद के प्रकाश द्वारा वचन के प्रभावित सेवाकाई द्वारा भेद प्रगट की जाती है । परमेश्वर भेद का ज्ञान के माध्यम से संतों को मीरास देता है ।

मीरास

मीरास ***“अविनाशी और निर्मल, और अजर है जो स्वर्ग में रखी है..... जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है ”*** (1 **पतरस** 1:4–5) । भेद का ज्ञान प्रकाश द्वारा आता है और वह प्रकाश पहले आत्मा के द्वारा प्ररितों और भविष्यद्वक्ताओं को दिया गया । इसलिए प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं का पुनःस्थापना होना आवश्यक है , इन दिनों जिससे कलीसिया सिद्धताई तक पहुँचे ।

<u>महिमा का धन</u>

भेद का ज्ञान बताता है, ***"उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा जो महिमा की आशा है तुम में रहता है"*** (**कुलुस्सियों** 1:27) । यह भेद का ज्ञान जो परमेश्वर की महिमा है प्रकाश द्वारा जानी जाती हैं । ***"परमेश्वर का यह गुप्त ज्ञान , सनातन से हमारी महिमा के लिए ठहराया"*** (1**कुरिन्थियों** 2:7)।

<u>भेद की संगती</u>

पौलुस को अनुग्रह हुआ ***"मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूं , यह अनुग्रह हुआ, कि मै अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं और सब पर यह बात प्रकाशित करूं, कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर के आदि से गुप्त था"*** (**इफिसियों** 3:8-9) ।

संतो का परिणाम भेद के प्रकाश से होता हैं, जो अगम्य संगति है जो ***"ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उस प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाए"*** (**आयत** 10) ।

<u>कलीसिया की जीत</u>

इसलिए परमेश्वर की आत्मिक शत्रुओं के ऊपर कलीसिया की जीत, कलीसिया भेद के ज्ञान में प्रवेश करने पर निर्भर होता हैं और इसलिए हम सेवकों को जरूरी है ***"परमेश्वर का वचन को पूरा करें जो गुप्त है"*** (**कुलुस्सियों** 1:25-26), संतों को प्रकाश में लाते हुए, सम्पूर्ण कलीसिया को परिपक्वता में चलाते हुए । परिपक्वता का चाल है महीमा का चाल और यह सब निर्भर होता है कलीसिया की भेद की ज्ञान । जैसे-जैसे कलीसिया भेद को जानने लगती है और मीरास में चलने लगती है, ***"पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है"*** **हबक्कूक** 2:14 । प्रधानताएं और शक्तियों के ऊपर जय होगी और बेबिलोन गिर जाएगी (**यशायाह** 2:2-4, **मीका** 4:1-4, **प्रकाश** 18:20) ।

<u>हम कैसे सेवाकाई करते है?</u>

"जिस का प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें कुलुस्सियों" 1:28

<u>प्रचार</u>

वचन का सेवाकाई का पहला भाव है:

- मसीह का प्रचार ;

- परमेश्वर का वचन एलान करना ;
- ***"मसीह की महीमा जो समझ से परे है प्रचार करें"*** (**इफिसियों** 3:8) ;
- ***"परमेश्वर की सारी मनसा को पूरी रीति से बताना"*** (**प्रेरित** 20:27) ;
- ***"सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करने के लिए"*** (**मर्कुस** 16:15)
- ***"परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाना"*** (**प्रेरित** 8:12);

<u>चेतावनी</u>

यह वचन '*noutheteo*' नावथेटेओ SC Gr.# 3560 का अर्थ है : विवेक में डालना, सावधानी करना, हल्का डाँटना और यह अनुवाद किया गया **चेतावनी** वा **सुधारना** ।

वचन का सेवाकाई का दूसरा भाव हैं :

- सबको चेतावनी देना
- ***"एक दूसरे को चेतावनी देना"*** सब प्रकार के ज्ञान से भरकर (**रोमियों** 15:14);
- सेवक लोग अपना भार समझकर संतों को चेतावनी देना चाहिए (1 **थिस्सलुनीकियों** 5:12) ;
- जो भाई वचन को ना मानता हो अपना भाई जानकर चेतावनी देना (2 **थिस्सलुनीकियों** 3:15) :
- जब परमेश्वर का वचन संतों में बसता हैं तब उन्हें ***"सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ"*** (**कुलुस्सिओं** 3:16) ;
- वचन हमारी चेतावनी के लिए लिखा गया (1 **कुरिन्थियों** 10:11)

<u>शिक्षा</u>

वचन का सेवाकाई का तीसरा भाव है :

- हरेक को शिक्षा ;
- ***"और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ"*** (**मत्ती** 28:20);
- ***"वचनों की आदि शिक्षा"*** सिखाएं (**इब्रानियों** 5:12) ;
- विश्वास का सिधान्त सिखाएं (**यहूदा** 3);
- प्रेरितों के सिधान्त सिखाएं (**प्रेरित** 2:42) ;
- प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाएं (**प्रेरित** 28:31)
- ***इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रूके*** (**प्रेरित** 5:42) ।

<u>सब ज्ञान में</u>

वचन का सेवाकाई चौथा भाव है :

- सब ज्ञान में ;
  - मसीह हमारे लिए ***"परमेश्वर का ज्ञान है"*** (1 **कुरिन्थियों** 1:24)
  - मसीह ***"जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान बना"*** (1 **कुरिन्थियों** 1:30);
  - ***बुद्धि श्रेष्ठ है*** (**नीतिवचन** 4:7) ;
  - ज्ञान ऊपर से आता है (**याकूब** 3:17)

<u>लक्ष्य सिद्ध है</u>

"हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें" (**कुलुस्सियों** 1:28)।

हरेक पंचदलिय सेवक का सेवाकाई का लक्ष्य (**इफिसियों** 4:11) है ***"जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं ,और सेवा का काम किया जाए ,और मसीह की देह उन्नति पाए ,जब तक कि हम विश्वास , और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न बन जांए और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ते जांए "*** (**इफिसियों** 4:12-13) ।

सेवक जिम्मादार है वचन के सेवाकाई द्वारा संतों को बालकों से लेकर (**इफिसियों** 4:14) सयानों तक, जो ***"प्रेम में सच्चाई बातें करें"*** (**आयत** 15) और प्रभावशाली कार्य करें ***"जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर , और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिणाम से उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए"*** (**इफिसियों** 4:16) ।

लक्ष्य सिद्ध है : ***"हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं , आरम्भ की शिक्षा "*** को छोड़कर (**इब्रानियों** 6:1) । संतों को ***"धार्मिकता के वचन में "*** (**इब्रानियों** 5:13) कुशल बनना है । यह प्रभावशाली वचन का सेवाकाई का प्रतिफल है ।

<u>सेवकाई "उसके कार्यानुसार है"</u>

"और इसी के लिए मैं उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सार्मथ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूं" **कुलुस्सियों** 1:29 ।

सेवक को **"परिश्रम"** कहा गया है और सेवाकाई के कार्य में होड़ लगाता है । सेवक को ***"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने प्रयत्न कर , जो लज्जित होने न पाए , और जो सत्य के वचन को ठिक रीति से काम में लाता हो"*** 2 **तिमोथियुस** 2:15 ।

कुछ भी हो सेवाकाई की कुंजी जिसे जानने की आवश्यकता है ***"उसका कार्य करना"*** हमारे अन्दर; यह परमेश्वर का कार्य है, उसका परिचालित सार्मथ का कार्य हमारे अंदर और हमारे द्वारा होती हैं । परमेश्वर का प्रभावशाली कार्य उसके आत्मा के द्वारा जो हमारे द्वारा होती है अंत में ठोस परिणाम को प्रगट करता है ।

"अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है" (**इफिसियों** 3:20) । पौलुस का अद्‌भुत प्रार्थना का

जवाब जो हमारे लिए है कि हम ***“सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाए ”*** (**आयत** 16) ; कि हमारा ह्दय विश्वास में और उसके प्रेम के समझ में भर जाना और ***“परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाना”*** (**आयत** 17-19) केवल इसलिए संभव है क्योंकि हम उसके सन्तान है- उसकी सामर्थ हमारे अंदर पहले ही काम कर रही है ।

यह वही सामर्थ है जो सेवक के अंदर काम करती है, जो सेवक को ***“हरेक मनुष्य को मसीह यीशु में करती है”*** ।

पावल गेल्लीगन

****

फीज़ी भ्रमण: पावल, निकोलस जेक्सन, देन्डी मोरिस (ग्लाडस्टोन) और अन्जी शर्मा और उनकी लड़की एस्लीन (ब्रिसबेन) रवाना होंगे शुक्र्र्वार 7 दीसम्बर को फीज़ी सेवाकाई के लिए एक सप्ताह । यह एक दोहरा भ्रमण है जब एक दिन की भ्रमण के दौरान जब दल घर वापस आ रही थी अमेरिका से । एक अद्‌भुत गवाही हुई थी उस भ्रमण के दौरान (साथ में दिया गया है)

हिन्दू समाज में फलवन्त और प्रभावशाली सेवाकाई के लिए प्रार्थना करें ।

<u>फीज़ी से गवाही</u>

अमेरिका से आते समय हम फीज़ी होकर गुजरे, एक छोटी टापू राष्ट्र जो पूर्व ब्रिसबेन से 4 घंटों की हवाई सफर है; जनसंख्या दस लाख, जहाँ आधा फीज़ी के लोग और आधा भारतीय रहते हैं, जिन्हें ब्रिटीस लोगों ने चिनी की कारखानों में मजदूरों के रूप में काम करने लिए लाया था ।

हमने ब्रिसबेन की घर कलीसिया में जून 2007 में स्थापित की जिन्हें एक भारतीय परिवार चलाते हैं, मार्क और एज्नी शर्मा, जो फीज़ी से यहाँ कई साल पहले रह गए । वे लोग फीज़ी में इस साल सितम्बर को छुट्‌टी मनाने गए और उन्होंने हम से पूछा कि क्या हम उनके चाची के घर आ सकते है, जो दुष्ट आत्मा से ग्रसीत होकर दो पुत्र मरने के बाद एक भयंकर मानसिक रोग से पीड़ित हैं ।

यह तय था कि एन्जी की चचेरी बहन की पति राकेश हमें हवाई अड्‌डा से लेकर जाएंगे जैसे कि हमें 15 घंटा का समय मिला था । राकेश नंदी हवाई अड्‌डा में टैक्सी चलाते है ।

यह उसकी बहन और उसके पति हिन्दु थे; उन्होंने हमें अच्छे ठंग से सत्कारा और मसीह की गवाही झुण्ड से प्राप्त की और हमने उन्हें दक्षिण अफ्रिका की बहुत बातों की गवाही दी ।

हम ने क्या हम रोहीनी की माँ से मिल सकते है और वे सहमत हुए , परन्तु उसने हमें चेतावनी दी कि उन्हें घर के अन्दर जाने के लिए न कहें । कई बार उन्होंने अपनी बेटी से भी मिलने से इन्कार की है। फीज़ी में गहरी मानसिक रोग से पिड़ीत व्यक्ति के लिए कीई भी उपचार नहीं है और उस परिवार के लिए यह एक शर्म की बात थी ।

पति राकेश ने हमसे कहा, “यदि सास चंगी हो जांए तो सारे भारतीय समाज के लिए एक आशिष की कारण होगी” ।

हमें एक छोटी सी कुटी में ले जाया गया ;ससुर बाहार गए थे और स्त्री हम से मिलने से इन्कार कर दी । मै दरवाज़े के एक छोटी सी छेद से देख पा रहा था । स्त्री चिथड़े कपड़े पहनी हुई थी, ईख काटनेवाली छुरी हाथ में ली थी, और हिन्दी में चले जाने के लिए कह रही थी, उसके सम्पत्ति से निकल जाने के लिए इत्यादि और पूछ रही थी कि " **मेरे बेटे को किसने मारा** " । वह बहुत ही बेचैन, द्रुत, डरानेवाली, आक्रामक थी । मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरे सब शांतिपूर्ण अंग्रजी शब्दों ने शायद थोड़ा भिन्नता जरूर लाया । चार लोगों की दल, पावल, डॉन, जेनेट और हेलेन , (निक अमेरिका में ही रूका था) करीबन ढेड़ घन्टा तक उस स्थन में हमने प्रर्थना, आरधना और अर्न्तबिनती उस स्त्री के लिए हमने प्रर्थना की । प्रर्थना के दौरान हमे महसुस हुआ कि उस स्त्री के जीवन में दुष्टात्मा का सायाँ था । परमेश्वर की ओर से जो कुछ हमें करने के लिए कहा गया था पूरा करके हम वापस आ गए और हमें दुख बिल्कुल नही हुआ की हमें अंदर जाने को मना किया गया ।

एक बात ने हम से बातें की कि उस बन्धनयुक्त कमरा के दीवार में हिन्दु देवताओं के तस्वीरे थी परन्तु साथ ही में यीशु के तस्वीरें सहित एक नयाँ साल का केलेन्डर था और उसके ऊपर अनुग्रह का वचन था । उसने हमें आशा दी ।

हम नेवताहारी के घर वापस चले गए ;उन्हें एक बाईबल दे सके और उन्हें निर्देशन दे सके कि कैसे माँ के लिए प्रार्थना करें - जानते हुए वे हिन्दु है लेकिन वे राज्य के बहुत करीब है ! हम ने उन्हें कुछ रूपये भी दिए की माताजी के लिए एक रंगीन और सुंदर वस्त्र खरिदे ।

शनिवार 10 नवम्बर को हमारी बहन एन्जी ब्रीसबेन में हमें बताने के लिए बुलाई कि एक विशेष हिन्दु त्योहार के एक दिन पहले उनके चचेरी बहन और उनके पति फीज़ी में माताजी से मिलने एक नयाँ वस्त्र लेकर गए । जब वे पहुँचे माताजी और पिताजी उस कुटी के आंगन में बाते करते हुए बैठे थे - **स्त्री ठिक चेतना में थी** , उसने अपनी बेटी को अभिवादन की , उन्होंने उसे उसके बचपन के प्यारे नाम से बुलाया ; उन्होंने उसे घर में स्वागत किया ; नयां वस्त्र स्वीकार किया और धारण की, बेटी से कहीं कि उनके बाल कंघी कर दे (जो सालों लापारवाही से बाल उलझे थे और जट्टाधारी बन गए थे), और उसे बताया कि उन्हें दुष्ट ने जकड़ा था और अब दौरा नहीं पड़ता है । पिता ने कहा कि उनकी पत्नी उसी दिन से ठिक होने लगी जिस दिन हम ने दौरा किया था । हम दरवाज़े से अंदर नही जा सके परन्तु परमेश्वर ने की ! हल्लेलुयाह !

इसने द्वार खोल दिया जैसे पति राकेश ने भारतीय समाज के लिए भविष्यद्वाणी की थी

* *

<u>सेवाकाई यात्रा का एक रिपोर्ट</u>

एक झुण्ड़ छ दिनों की यात्रा करते हुए काबूलचर, ग्लेड़स्टोन, राकहेमटन, माके और प्रोसेरपाइन और अन्य भाईयों को भ्रमण करते हुए 2500 किलोमिटर तय की ।

पास्टर इयान स्टाप्लेटान, द क्रास क्रीस्चयन मिनिष्ट्री, वार्वीक

नयाँ पास्टर होकर और पहली बार झुण्ड का सदस्य बनकर स्वतंत्रता के साथ घर-घर यात्रा करते हुए और साक्षी देते हुए घुमना एक अद्‌भुत बात थी जो यहोवा उसके लोगों को एक बार फिर चला रहा है । मै छः दिनों की सेवाकाई में कई गवाही लेकर आया हूं जो विश्वास में मज़बूत कर देनेवाली है ।

भयानक अद्‌भुत जो मुझे यहोवा ने दिखाई, वे हैं :

1) **परिवार का एक गहरा प्रगटीकरण**

मैने परिवार का विस्तृतता देखी जिससे हम ताल्लुक रखते हैं । परमेश्वर का परिवार का कोई नगर सिमा , राज्य अथवा क्षेत्र-सीमा नहीं हैं ; कोई भी राष्ट्र हमें अलग नहीं कर सकती है । यह आत्मीयता और भरोसे के साथ जुड़ा हुआ है जिसको छोटी-छोटी घर कलीसिया में बधा हुए हैं जहाँ हम मिलते थे, अद्‌भुत प्रेरणायुक्त थी । हम केवल गुजरते हुए भ्रमण करनेवाली दल नहीं है , परन्तु भाई-बहने सच्ची **कोइनोइनियाँ** ***koinoinia***, (संगती) में आपस में बाँटकर एक दुसरे के जीवन के लिए मज़बूत हिस्सा बनते जाते है **इफिसियों** 4:4–6 और **भजन** 133 के अनुसार । इस आत्मियता द्वारा, यह बन्धन, हमारे पिता का अनुग्रह सब में सेंत-मेंत में बहने लगता है जो ग्रहण करने के लिए इच्छा रखते है, और वहाँ एक भी ऐसा कोई नहीं था जो ग्रहण करना न चाहता हों ।

2) **देखकर कि उसके लोंग सत्य के वचन के लिए कितने भूखे है**

पहला संगती सभा ऐसा था जैसा छोटे-छोटे चिड़ीयों के घोसलें जो उनके माता को भोजन के साथ वापस आते हुए देखना चाह रहे हो । यह अनुभव और बढ़ने लगा जैसे-जैसे दिन और सभाएं बितने लगी । मुझे खुद भी जीवन की रोटी बाँटते हुए खुशी महसुस हो रही थी (**यूहन्ना** 6:35, 58) । मैने सिखा मांस न खने के लिए जो हरदम शिलोह में सुनते रहते है । बहुत सारे भाई लोंग है जो सच्चाई से उसके सच्चाई को खोजते रहते है अतृप्त भूख जो भरने की आवश्यकता में नपहुँचनेवाली क्षेत्रों में रहते हैं । यह केवल मसीह के वचन के द्वारा ही पूरी की जा सकती है ।

3) **<u>उसका अनुग्रह, करूणा और अधिकार का एक सच्चा प्रदर्शन</u>**

वचन के सेवाकाई द्वारा हम ने देखा कैसे यहोवा उसके अनुग्रह, करूणा और उसके दया द्वारा प्रतीति दिलाता है, ऐसे परिस्थितियों मे भी जहां हम आशाहीन हो जाते हैं । वह कोमलता के साथ बन्धुवाई को मुक्त करता है और जीवन को सम्पूर्ण तौर से पुनःस्थापना करता है (**यूहन्ना** 10:10) । एक सभा में एक जवान स्त्री को छुटकारा मिली, चंगाई मिली और सम्पूर्ण तौर से स्वस्थ हो गई । मैने कुछ दिनों में उसके कोमल अनुग्रह को बहुत गहीराई रीति से देखा है।

एक बात स्पष्ट है : परमेश्वर अपने लोगों के लिए एक बार फिर उत्कट प्रेम दिखा रहा है । हरेक सभा जहाँ हम हाजिर थे, सम्पूर्ण रीति से स्वतंत्र तौर और धर्म के रीति पर नहीं थे । वह हमें अद्‌भुत तौर से हमें अगुवाई कर रहा था जैसे उसने वायदा किया है (**सपन्याह** 3:18–20)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

निकोलास जेक्सन, शिलोह मे प्रशिक्षण सेवक

हमने सिखाते और प्रेरीतिय सिधान्त बाँटते, संगति करते, रोटी तोड़ते और एक साथ प्रर्थना करते हुए घर-घर सेवाकाई की (**प्रेरित** 2:42) । यह एक सफल और फलदायक दौर था और मसीह जीवन के दो ख़ास कारक हैं जिसने मेरे जीवन में छाप छोड़ा :

1) **प्रेरितीय झुण्ड की प्रगटीकरण**

एक प्रेरितीय झुण्ड का स्वभाव से भौगोलिक रीति कुछ ताल्लुक नही रखता परन्तु रिश्तों से रखता है । भाई लोग जो एक प्रेरित और एक प्रेरितीय सेवाकाई से समबंध रखते है , सब के सब यह झुण्ड के विश्वासियों के साथ में भागीदार होते हैं और उस अनुग्रह को उस नाप के अनुसार प्राप्त करेंगे जो एक प्रेरित को मिलता हैं (**इफिसियों** 4:7) । सब भाई लोग जिन्होंने हमें नेवता दी उन्होंने उनके बीच प्रेरित (पावल गल्लीगेन) को स्वीकार की उनके झुण्ड सहित और इस प्रकार प्रेरितीय झुण्ड के भागिदार बन गए । प्रेरित को ग्रहण करने के द्वारा, हम प्रेरितीय सिधान्त के भागिदार बन जाते हैं और बढ़ते जाएंगे ।

प्रेरितीय झुण्ड के ध्यान देनेवाली अन्य कारक है कि भाईलोंग एक मन के हो जाते है। इस दौरे में, कोई भी विरोध नहीं आया ; हमारे ह्दय यीशु से प्रकाश पाने के लिए खुला था इसलिए परमेश्वर का वचन निकला और अद्‌भुत तौर से बहने लगी । हम सब नयाँ स्तरों में पहुँच गए और सब वचन और आत्मा के संदर्भ में एक होने से था ।

2) **सेवाकाई का सच्चा स्वभाव**

मैने सिखा कि सेवाकाई धर्मोपदेश करने का आसन तक अथवा नियमबद्ध वृतान्त तक ही सीमित नहीं है। जब यीशु को किसी ने निमन्त्रण किया तो उसने एक नियमबद्ध कलीसिया की सभा के तरह नही प्रचार की । वह जीवित वचन है और यही इस दौरा का प्रमाण था ।

सभी सभाएं परिवारों के बीच थी । परिवार साधरणत घरों में मिलती है और यह दौरा लोगों के घरों में थी । एक स्थान में गपशप करते करते रूकना पड़ा और सुबह की चाय लेते वक्त एक मौका आया एक प्रिय भाई को सेवा पहुँचाने टेलिफोन के द्वारा (यह भाई राज्य के बंधीग्रह में है), यीशु की गवाही बाँटने पड़े, भाईयों के बिच जो ईकट्‌ठे थे आत्मा का कार्य महान रूप से प्रगट हुआ।

सेवाकाई वचन से जीवित रहनेवालों से होती है और वचन हम मे रहता है । पुत्र आत्मा की अगुवाई में चलते हैं और जब हम में वचन रहता हैं और अनुग्रह का पुत्रत्व पाई हैं , हम वचन को खोल सकते है और आत्मा की रीति पर सेवाकाई पहुँचाते हैं । समय समय में आत्मा सेवाकाई पहुंचाती थी हमारे जीवन में ईजबेल की प्रभाव से छुटकारा देकर मन को केन्द्रित करते हुए कि जैसे हम ने छुटकारा पाई है उसी प्रकार छुटकारा देनेवाले बन जाएं जिस के पास ***“राज्यों के ऊपर सार्मथ है”*** (**ओबद्याह** 21, **प्रकाश** 2:26-27)

* *